

## पर्वतारोहण

---

मानव का आदि युग से प्रकृति के साथ गहरा सम्बन्ध रहा है | वह इसके साथ रहकर सदैव आनन्द की खोज में लगा रहता है | इसीलिए प्रकृति तथा मानव का आपसी सम्बन्ध अविच्छिन्न रूप से सदा के लिए जुड़ गया है | इसी कारण मानव की प्रवृत्ति घुमक्कड़ किस्म की बन गई है | पर्वतारोहण इसी प्रवृत्ति का अंग है |

पर्वतारोहण से अभिप्राय है पर्वतों के शिखरों पर चढ़ना | आज के यान्त्रिक युग में पर्वतारोहण का शौक मानव के साहस का परिचय तो देता ही है साथ ही उसका मनोरंजन भी करता है | यह शौक बहुत दुर्गम व दुःसाध्य है | भयंकर व कठिन मार्गों को पार कर सीधी ऊँचाई पर शिखर तक पहुँचना वास्तव में जोखिम भरा काम है | इस प्रकार के काम केवल साहसी लोग ही कर सकते हैं |

हिमालय के सर्वोच्च शिखर 'एवरेस्ट' पर विश्व के कुछ साहसी लोगों ने ही सबसे पहले अपने कदम रखे थे | उसके बाद तो हिमालय के अन्य दुर्गम शिखरों पर अनेक लोग अपनी पद-चाप छोड़ चुके हैं | अभी कुछ समय पूर्व मानव ने कंचनजंगा शिखर पर अपनी कीर्ति पताका फहरायी थी | पर्वतारोहण का साहसिक कार्य कोई भी व्यक्ति अकेले नहीं कर सकता है | इसके शौकीन इस काम के लिए पुरे दलबल के साथ चलते हैं | उनके साथ ऐसे लोग भी होते हैं जिन्हें पर्वतों की कुछ जानकारी होती है | अपने साथ वे उपयोगी वस्तुएँ व अनिवार्य अन्य सामान ले जाते हैं | पर्वतारोहण के लिए प्रायः उन्हें औजार, मोटे रस्से, जंगली जीव जन्तुओं से सुरक्षा के लिए अस्त्र, हवा, जल तथा हिम की सामग्री, तम्बू, पर्वतों के मान चित्र और कैमरे आदि की आवश्यकता पड़ती है | इनके अतिरिक्त ये पर्वतारोही सामन ढोने वाले पहाड़ी, डाक्टर, पत्रकार तथा भूगोलवेत्ता को भी साथ ले जाना पसन्द करते हैं |

विश्व प्रसिद्ध पर्वतारोही जिनके साहस की गाथाएँ सर्वप्रचलित हैं वे हैं – अँग्रेज पर्यटक सर जार्ज एवरेस्ट, हावर्ड वैरी, कप्तान हिलैरी, इर्विन ओल्ड, जनरल ब्रूस, मैलोरी व कर्नल हंट तथा भारतीय पर्यटक शेरपा तेनसिंह और ब्येन्द्रिपाल | नगराज हिमालय भारत का सरताज है | यह पर्वतारोहण के शौकिनो के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है | युवा वर्ग प्रतिवर्ष

इसके दुर्गम शिखरों पर पहुँच रहे हैं | आजकल युवतियाँ भी इस शौक में सम्मिलित होती जा रही हैं | वे भी युवको की भाँति निडर तथा साहसी हैं | प्रायः पर्वतारोहण के शौकीन वे ही लोग होते हैं जो मृत्यु को खेल के समान समझते हैं | आज से कुछ समय पूर्व कुछ उत्साही युवको ने हिमालय के ऐसे दुर्गम क्षेत्रों में पद चिन्ह छोड़े थे, जिन्हें पहुँच से बाहर माना जाता था |